एक डाल पर तोता बोले, एक डाल पर...

डॉ. किशोर पंवार

लोकप्रिय फिल्मी गीत का यह मुखड़ा सभी ने सुना होगा। एक डाल पर तोता बोले एक डाल पर मैना, दूर-दूर बैठे हैं लेकिन प्यार तो फिर भी है ना। तोता-मैना के किस्से हमारे लोक साहित्य में खूब मिलते हैं। कुछ किस्से ऐसे भी हैं जिनमें किसी दुष्ट व्यक्ति की जान दूर कहीं पिंजरे में कैद तोते में होती है। अतः उस दुष्ट शैतान को मारने के लिए तोते को मारना ज़रूरी होता है। कुछ भी हो तोता-मैना ने मानव जीवन को बहुत प्रभावित किया है इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता।

फिल्मी गीतों और इन किस्सों को पढ़कर एक आम समझ बनती है कि दोनों एक ही प्रजाति के पक्षी हैं, जो हमेशा साथ-साथ रहते हैं। दोनों प्रेमी-प्रेमिका है - तोता नर और मैना मादा। किस्सों के मुताबिक ये आपस में खूब बतियाते हैं, अपना दुख-दर्द बांटते हैं।

परन्तु जीव विज्ञान के नज़रिए से देखें तो एक अलग ही तस्वीर उभरती है। दोनों न तो एक ही प्रजाति के पंछी है और न ही दोनों साथ-साथ रहते हैं। हां, कभी एक ही पेड़ पर बैठे ज़रूर देखे जा सकते हैं।

इनकी और बारीकियों में जाने से पहले तोता-मैना का प्रचलित किस्सा जान लें तो मामले को समझने में आसानी होगी। किस्से की प्रामाणिकता जानने हेतु मैं बाज़ार से 'किस्सा तोता मैना असली' खरीद लाया। संक्षेप में किस्सा यूं है कि रमणीक द्वीप पर एक सुन्दर उपवन था। फल-फूलों से लदे इस सुन्दर उपवन में कई सुन्दर रंग-बिरंगे पक्षियों ने अपना निवास बना रखा था। एक दिन एक तोता व्याकुल अवस्था में आकर एक वृक्ष की डाल पर बैठ जाता है। इसी वृक्ष पर एक मैना भी रहती थी।

अपने वृक्ष पर दूसरे तोते को बैठा देख वह उससे कहती है, ऐ तोते यहां से उठ और कहीं और जा। मैना की यह बात सुन तोता कहता है कि ऐ मैना हम तेरा क्या बिगाड़ते हैं। आज की रात बिताकर सुबह हम अपने स्थान पर चले जाएंगे। मैना ने कहा कि तू हज़ार बार कहे तो भी मैं नहीं मानूगी क्योंकि पुरुषों के बराबर बेदर्द जाति और कोई नहीं। इस पर तोता भी क्रोधित होकर कहता है कि तू पुरुषों को व्यर्थ ही बदनाम करती है। सच तो यह है कि दुनिया में स्त्रियों से बढ़कर बेपीर कोई नहीं। अपनी बात सिद्ध करने के लिए मैं तुझे एक कहानी सुनाता हूं, सुन... और फिर एक सिलसिला चल पड़ता है कहानियों का। एक किस्सा तोता सुनाता है तो दूसरा मैना। तोता स्त्रियों के बेदर्द होने की तो मैना मर्दों की बेवफाई की।

किस्से के अंत में तोता मैना उसी उपवन में रहने वाले एक हंस से कहते हैं कि तुम हमारा इंसाफ कर दो। हंस कहता है कि संसार में सभी स्त्री-पुरुष एक जैसे नहीं होते। यह सुनकर तोता मैना खुश होकर हंस की सलाह पर शादी कर लेते हैं।

किस्सा तो बढ़िया है कि दोनों शादी रचा लेते हैं परन्तु विज्ञान की दृष्टि से यह संभव नहीं है। जन मानस में पर्यावरण के अभिन्न अंग पक्षियों के बारे में कोई भ्रम न फैले, इसलिए इस किस्से की जीव वैज्ञानिक विवेचना ज़रूरी हो जाती है।

सच तो यह है कि दोनों अलग-अलग प्रजाति के पक्षी हैं। और भले पास बैठे हों या दूर, दोनों में कतई प्रणय नहीं हो सकता क्योंकि दोनों के अपने-अपने नर और मादा हैं जो

आपस में समागम करते हैं। दोनों का भोजन, रहने का स्थान, रंग-रूप और घोंसले अलग-अलग होते हैं।

तोता मैना से बड़ा, कबूतर के आकार का गहरे हरे रंग का लम्बी पूंछ वाला पक्षी है। इसकी पूंछ की लम्बाई 30 से.मी. तक होती है। चोंच लाल, विशिष्ट प्रकार से मुड़ी हुई होती है, जो फल भक्षण के लिए अनुकूल है। तोतों में लिंग भेद पाया जाता है। अर्थात नर और मादा को दूर से ही देखकर अलग-अलग पहचाना जा सकता है। नर के गले में गुलाबी तथा काले रंग का एक पट्टा होता है जिसे कण्ठी कहते हैं। मादा के गले में कण्ठी नहीं होती और वह नर से छोटी होती है।

तोते की एक खास किस्म *रोज़रिंग पेराकीट* अर्थात हीरामन तोता कुछ शब्द बार-बार बोलना सीख जाते हैं, जैसे 'राम राम', 'पधारो सा'। कुछ तोते मनुष्यों की नकल भी कर लेते हैं। इतिहास में बहादुर शाह के प्रिय तोते हीरामन का भी ज़िक्र है। गागरोन दुर्ग पर हुमायूं की फतह के बाद जब जीत का सामान मंदसौर से हुमायूं के पास पहुंचाया गया तो उसमें सोने के पिंजरे में कैद हीरामन भी था। जैसे ही उसने बहादुर शाह के गद्दार सेनापति रुमी खान को देखा तो गद्दार, धोखेबाज़ जैसे शब्द बोले थे। गागरोन के दुर्ग में आज भी इस तोते की मज़ार बनी हुई है।

तोते को तो सभी पहचानते हैं। मैना के बारे में कुछ संशय हो सकता है। हमारे आसपास दो-तीन तरह की मैनाएं मिलती हैं। सामान्य मैना बुलबुल से थोड़े बड़े आकार की गहरी भूरी, पीली चोंच वाली एक ढीठ किस्म की चिड़िया है। मनुष्यों के बीच बड़े आराम से रह लेती है। घर व होटलों के आस-पास तथा रेलवे स्टेशनों पर इन्हें दाना चुगते देखा जा सकता है। बोल चाल में इसे काबर भी कहते हैं। सामान्य मैना के अलावा जंगल मैना, ब्राह्मणी मैना और पहाड़ी मैना भी होती है। पहाड़ी मैना की बोली सुरीली होती है। यह भी तोते की तरह मनुष्य की नकल करती है। कुल मिलाकर सभी मैना बहुत बातूनी होती हैं और थोड़ा बहुत गा लेती हैं। हालांकि सामान्य मैना जब शाम को पेड़ों पर डेरा डालती हैं तो उनके कोरस की कर्कश आवाज़ को शोर की श्रेणी में रखा जा सकता है।

तो हमने यह पता लगाया कि तोता-मैना एक नहीं अलग-अलग प्रजाति के पक्षी हैं। ये रंग-रूप, आकार-प्रकार व व्यवहार में तो जुदा हैं ही, आपस में संतानोत्पत्ति भी नहीं कर सकते। तो विचारणीय सवाल है कि ऐसी बातें समाज में क्यों आम है। कुछ तो आधार होगा इन किस्सों कहानियों और गीतों का। मुझे लगता है कि इनके पीछे जिज्ञासु और खोजी मनुष्य के सामान्य अवलोकन छिपे हैं।

पहली बात, दोनों पक्षी बहुत आम तौर पर दिखने वाले पक्षी हैं। मानव से इनका घनिष्ठ सम्बंध है। दोनों ही बस्तियों में बड़े आराम व सहजता से रहते हैं। लगभग सभी लोग तोता-मैना को पहचानते है। दूसरी बात है कि दोनों बहुत शोर मचाते हैं। शाम को जिन पेड़ों पर मैना बसेरा करती है वहां इनकी चहचहाहट से बहुत शोर होता है। तोते भी अपने बसेरों पर डेरा डालते समय खूब शोर मचाते हैं। तोता-मैना दोनों पिंजरे के पक्षियों के रूप में पाले जाते हैं। इनके अधिक बोलने व मनुष्य की आवाज़ की नकल करने की क्षमता देखकर ही ये किस्से गढ़े गए होंगे।

जब ज़्यादा बोलने वाले पक्षी पास-पास बैठेंगे तो शोर तो मचाएंगे ही। जिससे शायद उस ज़माने में लोगों को यह लगा कि दोनों आपस में बात करते हैं और दोनों में प्यार है। आखिर किस्सागोई भी तो वही कर सकता है न जिसमें ज़्यादा बोलने का गुण हो। वैसे भी पक्षी जगत में ये दोनों सर्वाधिक बोलने वाले परिन्दों की जमात में आते हैं।

अमर कथाओं, किस्सों, इतिहास एवं कई लोकप्रिय फिल्मी गीतों के ये अमर पात्र आज गहरे संकट से गुज़र रहे हैं। एक तो इनके प्राकृतिक आवास खतरे में है, दूसरे इनकी तस्करी भी बहुत होने लगी है। पहाड़ी मैना और हीरामन तोते दोनों पिंजरे के पक्षियों के रूप में सर्वाधिक पकड़े जाने व बेचे जाने वाले परिंदे हैं। खबर है कि गागरोन क्षेत्र में पिछले वर्ष एक भी हीरामन ने बच्चे नहीं दिए। बस्तर की मैना के भी यही हाल हैं। अगर इनके संरक्षण हेतु ठोस कदम न उठाए गए तो डर है कि कहीं ये स्वयं एक किस्सा बनकर न रह जाएं और मनुष्य को अपनी आने वाली पीढ़ी को यह किस्सा सुनाना पड़े - एक था तोता, एक थी मैना। ***(स्रोत फीचर्स)***